प्रभु यीशु ने अपने प्राण पिता के हाथों में क्यों सौंपे? (लूका 23:46)

उत्तर:
आइए हम लूका 23:43 से आरंभ करके पूरा संदर्भ पढ़ें:

लूका 23:44-47

44 लगभग दोपहर का समय था, और पूरे देश पर तीसरे पहर तक
अंधकार छाया रहा।
45 सूर्य का प्रकाश जाता रहा और मन्दिर का परदा बीच में से
फट गया।
46 तब यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, “हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।” यह कहकर उसने प्राण
त्याग दिए।
47 जब सूबेदार ने जो कुछ हुआ देखा, तो परमेश्वर की बड़ाई
करके कहा, “निश्चय यह मनुष्य धर्मी था।”

“हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।” – यह हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के क्रूस पर अंतिम शब्द थे। पर प्रश्न यह है कि उन्होंने ऐसा क्यों कहा? क्या ऐसा कहना आवश्यक था? और क्या हमें भी अपने जीवन के अंत समय में ऐसे ही कुछ शब्द कहना चाहिए?

प्रभु यीशु ने अपने प्राण पिता के हाथों में क्यों सौंपे?
(लूका 23:46)

इसका उत्तर देने से पहले यह समझना आवश्यक है कि प्रभु यीशु के मृत्यु और अधोलोक में उतरने और मृत्यु की कुंजियों को पाने से पहले मरे हुओं का स्थान सुरक्षित नहीं था। अर्थात परमेश्वर के भक्तों की आत्माएँ मृत्यु के बाद भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं थीं।

इसीलिए हम पाते हैं कि भविष्यद्वक्ता शमूएल, जो परमेश्वर के सामने बहुत धर्मी था, फिर भी अपनी मृत्यु के बाद एंडोर की जादूगरनी द्वारा जादू के माध्यम से उठाया जा सका।

1 शमूएल 28:7-11

7 तब शाऊल ने अपने सेवकों से कहा, “मेरे लिये कोई ऐसा स्त्री ढूँढ़ो जिसमें भूत की साधना करने की शक्ति हो, ताकि मैं उसके पास जाकर उससे पूछूँ।” उसके सेवकों ने उससे कहा, “देख,
एन्दोर में ऐसी एक स्त्री है।”
8 तब शाऊल ने रूप बदल कर अन्य वस्त्र पहने, और दो आदमियों को साथ लेकर उस स्त्री के पास रात को गया। उसने कहा, “मुझे जादू से बताकर कह, और जिसे मैं तुझसे कहूँ, उसे मेरे लिए उठा।”
9 स्त्री ने उससे कहा, “देख, तू जानता है कि शाऊल ने क्या किया है, कि देश में से ओझों और टोनेवालों को नाश कर डाला है; तो फिर तू मेरे प्राण फँसाकर मुझे मरवाना क्यों चाहता है?” 10 शाऊल ने यहोवा की शपथ खाकर कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ,

प्रभु यीशु ने अपने प्राण पिता के हाथों में क्यों सौंपे?
(लूका 23:46)

तुझे इस बात से कोई दण्ड नहीं मिलेगा।”
11 तब स्त्री ने पूछा, “मैं किसे तेरे लिये उठाऊँ?” उसने
कहा, “मेरे लिये शमूएल को उठा।”

यहाँ हम देखते हैं कि मरने के बाद भी शमूएल की आत्मा परेशान की जा रही थी। इसी कारण जब शमूएल उठाया गया, तो उसने शाऊल से कहा:

1 शमूएल 28:15

15 शमूएल ने शाऊल से कहा, “तू मुझे क्यों घबरा रहा है, कि
मुझे ऊपर चढ़वा दिया है?”

इसी कारण प्रभु यीशु ने भी अपने प्राण पिता के हाथों सौंपे। जैसे वे अपने कार्यों और यात्राओं को जीवित रहते पिता को सौंपते थे, वैसे ही वे जानते थे कि मृत्यु के बाद भी अपनी आत्मा को पिता के हाथों सौंपना आवश्यक है।

परन्तु हम देखते हैं कि उनके मरने के बाद पिता ने उन्हें मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ सौंप दीं। जैसा कि प्रकाशितवाक्य में लिखा है:

प्रभु यीशु ने अपने प्राण पिता के हाथों में क्यों सौंपे?
(लूका 23:46)

प्रकाशितवाक्य 1:17-18

17 जब मैं ने उसको देखा, तो उसके पाँवों के पास जैसे मरा हुआ
गिर पड़ा। उसने अपने दाहिने हाथ को मुझ पर रखकर कहा, “मत डर;
मैं प्रथम और अन्तिम और जीवित हूँ।
18 मैं मर गया था, और देख, अब युगानुयुग जीवित हूँ; और मृत्यु
और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।”

इसका अर्थ यह है कि उस समय से लेकर इस संसार के अंत तक शैतान के पास अब कभी भी मरे हुए भक्तों की आत्माओं को सताने का अधिकार नहीं है। अब यीशु मसीह ही जीवितों और मरे हुओं की आत्माओं के स्वामी हैं।

रोमियों 14:8-9

8 यदि हम जीवित रहते हैं, तो प्रभु के लिये जीवित रहते हैं;
और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिये मरते हैं। इसलिये हम
जीवित रहें या मरें, प्रभु के ही हैं।
9 इसी कारण मसीह मरा और जीवित हुआ कि वह मरे हुओं और जीवितों दोनों पर प्रभु हो।

प्रभु यीशु ने अपने प्राण पिता के हाथों में क्यों सौंपे?
(लूका 23:46)

आज हमें अब यह डर नहीं है कि मृत्यु के बाद हमारी आत्मा कहीं सताई जाएगी। जब हम मरते हैं, तब हमारी आत्मा सुरक्षित और शत्रु से छुपी हुई रहती है। वह स्थान जहाँ शैतान पहुँच नहीं सकता, स्वर्ग का परदेस है – विश्राम और प्रतीक्षा का स्थान, जहाँ हम उस प्रतिज्ञा के दिन, अर्थात स्वर्गारोहण के दिन की प्रतीक्षा करते हैं। हालेलूयाह!

इसलिए आज हमें मृत्यु के समय अपने प्राणों को पिता को सौंपने की प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मसीह के पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ पहले ही हैं। परन्तु यह अत्यन्त आवश्यक है कि जब तक हम जीवित हैं, अपने जीवन को पूरी तरह उसके हाथों में सौंपें और ऐसे जियें जो उसे भाए। क्योंकि हम नहीं जानते कि कब हमारा जीवन यहाँ पृथ्वी पर समाप्त हो जाएगा।

मारनाथा! प्रभु शीघ्र आने वाला है।

कृपया इस संदेश को दूसरों के साथ साझा करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP

प्रभु यीशु ने अपने प्राण पिता के हाथों में क्यों सौंपे? (लूका 23:46)

GROUP….

Share on:
WhatsApp